ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-26-12-2020 ***सवैये- रसखान***

प्रश्नोत्तर

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

प्रश्न 1. ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर : कवि श्रीकृष्ण की रासलीला भूमि ब्रज के प्रति अपना प्रेम निम्नलिखित रूपों में अभिव्यक्त करते है -

1. कवि अगले जन्म में मनुष्य रूप में जन्म लेकर ब्रज में ग्वाल-बालों के बीच बसना चाहते है।
2. वह पशु के रूप में जन्म मिलने पर नंद बाबा की गायों के मध्य चरना चाहते है।
3. वह उसी गोवर्धन पर्वत का हिस्सा बनना चाहते है, जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया था।
~~~~~~~~~~

4. वह पक्षी बनकर उसी कदंब के पेड़ पर बसेरा बनाना चाहते थे, जहाँ कृष्ण रास रचाया करते थे।
5. कवि ब्रज के वन, बाग और तड़ाग (तालाब) का सौंदर्य देखते रहना चाहते है।

प्रश्न 2 : कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण हैं?

कवि श्रीकृष्ण और उनसे जुड़ी हर वस्तु से अगाध प्यार करते है। ब्रज के वन, बाग, तथा तालाबों के आसपास श्रीकृष्ण आया करते थे। वे इनमें गाय चराते थे और रास-लीला रचाते हुए आया-जाया करते थे। इन सभी से कवि कृष्ण का जुड़ाव तथा लगाव महसूस करते है। इसलिए कवि इन वनों, बागों और तालाबों को निहारते रहना चाहते है क्योंकि वह उनमें कृष्ण का अंश महसूस करते है।

प्रश्न 3 : एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?

उत्तर : कवि श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त है। वह कृष्ण की हर वस्तु से प्यार करते है। श्रीकृष्ण गायों को चराने के समय यह लकुटी और कामरिया (कंबल) अपने साथ रखते थे। यह लकुटी और कामरिया कोई साधारण वस्तु नहीं थी यह कृष्ण से संबंधित वस्तुएँ थीं, इसलिए कवि उन पर अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार है।

प्रश्न 4 : सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर : सखी ने गोपी से वही सब कुछ धारण करने को कहा, जो श्रीकृष्ण धारण किया करते थे। वह गोपी से कहती है, सिर पर मोर के पंखों का मुकुट, गले में गुंज की माला, तन पर पीले वस्त्र धारण कर तथा हाथ में लाठी लिए वन-वन गायों को चराने को।

प्रश्न 5 : आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?

उत्तर : मेरे विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी प्रभु श्रीकृष्ण का सान्निध्य इसलिए पाना चाहते है क्योंकि वह प्रभु श्रीकृष्ण के अभिन्न भक्त है। वह सभी जन्म में, सभी रूप में अपने इष्ट देव श्रीकृष्ण का सानिध्य पाना चाहते है। वह ब्रजभूमि के सभी पशु, पक्षी और पहाड़ में श्रीकृष्ण की निकटता को महसूस करते है। उन्हें लगता है कि इन सभी वस्तुओं के रूप में श्रीकृष्ण का सान्निध्य पाने से उनका जन्म सार्थक बन जाएगा।

प्रश्न 6 : चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आप को क्यों विवश पाती हैं?

उत्तर : इस सवैये के अनुसार-श्रीकृष्ण की मुरली की धुन अत्यंत मधुर तथा मादक है तथा उनका रूप अत्यंत सुंदर है। उनकी मुरली की मधुरता तथा उनके रूप सौंदर्य के प्रति गोपियाँ आसक्त हैं। वे इनके समक्ष स्वयं को विवश पाती हैं और कृष्ण की होकर रह जाती हैं।

प्रश्न 7 : भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर : **(क) भाव-** इस पंक्ति में कवि रसखान का श्रीकृष्ण से जुड़ी वस्तुओं के माध्यम से उनके प्रति अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है। श्रीकृष्ण गोपियों के साथ इन करील के कुंजों की छाँव रास-लीला रचाया करते थे। कवि के लिए इन करील कुंजों का अत्यधिक महत्त्व है। वह इन कुंजों को सैकड़ों स्वर्ण-भवनों से भी ज्यादा प्रिय एवं कीमती मानते है।

प्रश्न 8 : 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर : 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में 'क' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 9 : काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

उत्तर : उक्त पंक्ति का काव्य-सौंदर्य निम्नलिखित है -

भाव-सौंदर्य- गोपी अपनी सखी के कहने पर श्रीकृष्ण के समान ही वस्त्राभूषण धारण तो कर लेगी पर वह श्रीकृष्ण की मुरली को अपने होंठों पर नहीं रखेगी। इस पंक्ति में गोपी का मुरली के प्रति इर्ष्याभाव प्रकट हुआ है।

शिल्प-सौंदर्य

1. काव्यांश में ब्रज भाषा की मधुरता निहित है।
2. काव्यांश रचना सवैया छंद में है।
3. 'य' तथा 'र' वर्गों की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
4. 'मुरली-मुरलीधर' तथा 'अधरान (होंठों पर) अधरा न (होंठों पर नहीं)' में यमक अलंकार है।
5. काव्यांश में माधुर्य गुण व्याप्त है।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी 'कुसुम'